कामना नाटक में चित्रित स्त्री का यथार्थ

डॉ.महमद नयास पाशा

नाटककार जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के हर क्षेत्र में अपनी छाप छोडी है। कथा साहित्य के क्षेत्र में भी इनकी की देन महत्वपूर्ण है। आपके आठ नाटकों में विशेषरूप से भावना प्रधान पात्रों को प्राण देने में जयशंकर प्रसाद अनुपम है। वस्तुत: एक सफल नाटककार होते हुए भी कवि की गहरी कल्पना शीलता ने ही साहित्य को अन्य विधाओं में उन्हें विशिष्ट और व्यक्तिगत प्रयोग करने के लिए अनुप्रेरित किया। उनके नाटकों में अपना पृथक और सर्वधा मौलिक शिल्प इनकी चरित्र की भाषा सौष्ठव का सर्वथा निजि प्रतिष्ठान है। जयशंकर प्रसाद के नाटकों की आलोचना की गयी तो उन्होंने एक बार कहा था कि रंगमंच नाटक के अनुकूल होना चाहिए न कि नाटक रंगमंच के अनुकूल क्यों कि उनके नाटक दीर्घावधी के होते है एक निर्दिष्ट अवधि में अभिनय नहीं किया जा सकता।

प्रसाद के साहित्य में भारतीयता की झलक सर्वथा मिलती है। प्रसाद के साहित्य की आत्मा भारतीयता है। बच्चन सिंह लिखते है : "भारतीयता के मौलिक तत्वों को ग्रहण किये बिना न हम अपनी निजि अस्मिता की पहचान करा सकते है और न देश की"[1] । लेकिन, राष्ट्रीय सरोकारों के अतिरिक्त एक और प्रश्न था जो भारत में ही नहीं बल्की वैश्विक फलक पर मुंह खोल खड़ा था। वह था – भोग और उपभोग संस्कृति का परिणाम।

प्रसाद ने सामयिक राजनीतिक समस्याओं की पृष्ठभूमि में संपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को टटोलकर देखा और जाना कि प्रकृति, व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और संस्कृति सभी की समस्याओं का मूल प्रकृति के नैसर्गिक नियम के प्रतिकूल चरण है और वह नैसर्गिक नियम है– समरसता । प्रकृति का यही नियम पृथ्वी,आकाश और जल को एक संतुलन में बांधे हुए है–इसी से सृष्टि सुचारु रूप से चलती है।

इसी तरह मानवीय वृत्तियां– इच्छा, क्रिया और ज्ञान भी परस्पर सामरस्य से मनुष्य के संतुलित विकास में सहायक होती है। इनमें से किसी भी एक का अभाव संतुलन में गड़बड़ी पैदा कर सकता है। यही नियम समाज, राष्ट्र व संस्कृति पर भी लागू होता है। व्यक्ति–व्यक्ति, समाज–समाज, राष्ट्र–राष्ट्र एक दूसरे से समन्वय और सामरस्य की स्थिति में तो एक साथ पनप सकते हैं, लेकिन एक के दूसरे हावी होते ही संघर्ष और द्वंद्व, दुःख और क्लेश उत्पन्न होता है। प्रसाद ने देश और संपूर्ण मानवता के स्वतंत्र, चेतन और स्वाभिमानपूर्ण विकास के मार्ग में

केवल एक बाधा को देखा और वह था–सामरस्य का अभाव। प्रसाद की इस निष्पत्ति में आधारभूत उनकी सांस्कृतिक सोच को समझने के लिए की सामयिक पृष्ठभूमि को देखना जरूरी है।

प्रकृति चित्रण और धार्मिक संस्कार आदि विषयों को अभिनव और आकर्षक भंगिमा के साथ अपने पाठक प्रेमियों को परोसा है। इनके नाटकों के स्त्री पात्रों में भारतीय संस्कृति की गरिमा और सभ्यता को बडे प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत हुई है। कामना नाटक में स्त्री पात्रों के माध्यम से गीत तथा रचनाऐं भारतीय जीवन मूल्यों को बडी शालिनता से उपस्थित करती है इन्हि पात्रों के जरिए से राष्ट्रीय गौरव और स्वभिमान को अपने साहित्य में सर्वत्र स्थान दिया है। जयशंकर प्रसाद की एक और खासियत है यह है कि कामायनी जैसे महाकाव्य और कामना नाटक में स्त्री को वनलक्ष्मी के रूप में एक बहुत बडा स्थान– मान दिया है इस पात्र के माध्यम से प्रकृति के विविध पक्षों को बडी सजिवता से चित्रित किया है। कामना नाटक में समय–समय पर द्वीपवासियों को प्रकृति के प्रति जागुरुकता दिलाने के लिए प्रकृति के सौम्य सुंदर भाव को प्रस्तुत करते हुए और विकृत भयानक वातावरण को भविष्य वाणी में होने के लिए प्रत्यक्ष होती है। इसके अतिरिक्त प्रकृति का अलंकारिक, मानवीकृत स्वरूप, इन्हीं स्त्री पात्रों में प्रेम का वियोग पक्ष और संयोग पक्ष दोनों ही पूर्ण छवि के साथ विद्यमान है। वनलक्ष्मी के पात्र के जरिए मानव कल्याण का स्वर है।

भातिीय संस्कृति में नारी को श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' सभ्यता और संस्कृति मानव विकास के दो पक्ष है इसको 'शाश्वत रूप से बनाए रखने की जिम्मेदारी मूलत: नारी ने ही उठाई है। कामना नाटक में वनजीवन से लेकर खेतिहार, भौतिक समृद्धी का उत्तरोत्तर विकास सभ्यता की झलक कामना नाटक के स्त्री पात्रों में यथार्थ दृष्टी नजर आति है।

भारतीय संस्कृति के मूल तत्व में धर्म चरित्र, शिष्टाचार, विनय, नारी समादर, समन्वय जैसे अनेक पात्रों का व्यापक चिंतन और कामना, लीला के पात्रों से पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति के रंग में रंगति जा रही नई पीढि के मानसिक बदलाव को इन पात्रों के माध्यम से देखा जा सकता है।

कामना नाटक में स्त्री पात्र के द्वारा आधुनिकता का आग्रह

आधुनिकता समय के साथ–साथ परिवर्तन होता है। आधुनिकता भारत में पाश्चात्य प्रभाव से प्रभावित है। कामना नाटक में जटिल स्थितियों में जकडे हुए जीवन की संघर्षमय एवं द्वंद्वात्मक मनोदशाओं का सफल चित्रण किया गया है। समाज में फैलि हुई विसंगतियों के प्रति आज की युवा पीढी कैसे पाश्चात्य प्रभाव से सभ्यता को गले लगाने उत्सुक है इस बात का निदर्शन कामना, लीला, लालसा के पात्रों से चित्रित होता है। सुविधाओं

की भंढार होते हुए भी आर्थिक लालसा से अच्छे–बुरे का अर्थ न समझते हुए उपद्रव का आतंक फैलाना, आदिम कालीन सभ्य संस्कृति मिटाकर स्वर्ण और मदिरा के दास बनकर अपने आत्मीय भोली–भाली जनसमुदाय को अच्छे रास्ते से भटका देते है। कामना रूपक पश्चिमी– सभ्यता द्वारा लाए गए विलास की वेदना भरी तस्वीर है। इस रूपक में प्रसाद ने हमारी संस्कृति के करुण विनाश और उद्धार का मनोहर चित्र अपने पात्रों से खींचा है।

कामना नाटक एक मनोवैज्ञानिक नाटक कह सकते है इस नाटक के स्त्री पात्रों में जीवन का विशाल क्षेत्र समाहित हुआ है जैसे प्रेम, सौंदर्य, देश प्रेम, रहस्यानुभूति, दर्शन, आदि को देख सकते है। स्वतंत्र प्राप्ति के बाद भी नारी स्वतंत्र नहीं हो पायी है। नारियों को शोषण आज भी जारी है। नागार्जुन ने नारी को अपनी कविता 'तालाब की मछलीयाँ' में नारी का मर्म भेदी चित्रण किया है।

"हम भी मछली तुम भी मछली

दोनों ही उपभोग की वस्तु है"[2]

अनीति और कूटनीति हर माध्यम का इस्तेमाल कामना नाटक के स्त्री पात्रों में किया गया है । नियंत्रण क्षेत्र के और कंपनी हितों की पूर्ति के लिए राजनीतिक सत्ता का प्रयोग अंग्रेजों ने चालाकी से किया। इस नाटक में विलास अपनी पूर्ती के लिए कामना का इस्तेमाल करता है। व्यापार और लाभ का लोभ साम्राज्यवाद की लालसा में हो गया था, यह भारतीयों को बहुत देर से मालूम हुआ जब आपस में लड़ाते और संधियां करते हुए प्रसाद के नाटक 'कामना' और भोगवादी दर्शन वह तस्वीर 'कामना' में देखने को मिलती है। धन और भौतिक वस्तुओं की आवश्यकताओं को उत्पन्न करके लालसाओं की पूर्ति की प्रक्रिया में मूल्यों क्षरण और स्वयं मनुष्य का अवमूल्यन किस प्रकार होता है, यह 'कामना' के द्वीप में विलास के प्रभाव से देखा जा सकता है। प्रसाद की दृष्टि में मनुष्य के अस्तित्व पर सबसे बड़ा खतरा है। इस खतरे के समाधान के लिए प्रति भौतिकता का निषेध कर कर्म से प्रवृत्त होने की बात कहते हैं। इस निषेध तत्त्वों को संकेतित करते हैं जो भौतिकता के अतिरेक को बढावा दे रहे थे।

कामना अपनी मन:स्थिति को दर्शाते हुए लीला से कहती है जो सारी सुविधा प्राप्त होते हुए भी बेचैन है। अपनी दिनचर्या के कार्यों से हठकर अलग सोच रखती है यहाँ तक कि कई संदर्भों में स्वयं अनभिज्ञ है – "मैं क्या चाहती हूँ? जो कुछ प्राप्त है इससे भी महान् वह चाहे कोई भी वस्तु हो हृदय को कोई चुरा रहा है। कुछ आकांक्षा है पर क्या है इसका? इसका किसी को विवरण नहीं देना चाहती। केवल वह पूर्ण हो और वहाँ तक जहाँ तक की असली सीमा हो। बस"[3] पाश्चात्य के प्रभाव से कामना संपूर्ण रीति से शरणागत हुई है विलास नामक विदेशी

युवक से बहुत प्रभावित होति है पश्चिम के पुंजिवाद के जालजंजाल में पूरी तरह फंस गई है अब उसे वहाँ से बाहर निकलने का मार्ग नहीं दिखाई दे रहा है।

भारतीय समाज के बारे में केवल भारत के भूगोल में बंधकर बात करना उचित न होगा। आज कामना, लीला, लालसा जैसे स्त्री समाज भारतीय आध्यत्मा के प्रति जिसने समय–समय पर संजीविनीबूटि का काम किया था वह संजीविनी बूटि भी भारतीय जीवन शैली को बचाने के लिए बे असर साबित कर रही है। जयशंकार प्रसाद कामना नाटक में लालसा की अतृप्ती को लेकर कहते है "दारुण ज्वाला अतृप्ती का भयानक अभिशाप मेरे जीवन का संगी कौन? " मैं लालसा हूँ प्रसाद के स्वतंत्रता भवन के आनंद विहार से भी जी नहीं भरा, कोई किसी को रोक नहीं सकता और न तो विहार की धारा में लौटने की बाधा है"[4]। लालसा के चरित्र में अध:पतन की प्रवृति देखने को मिलती है। स्वर्ण लोलुप की श्रंखला है और उसे प्राप्त करने पशुओं से भी गये बीते दृश्य नजर आते है ऐसे चरित्रों से सामाजिक ढांचा चरमराकर टूट रहा है। व्यक्ति का मन असंतोष के भंवरे में फंसा है, आत्म संयम का क्षरण सब एक साथ समेट लेने की प्रवृति कामना लालसा और लीला के पात्रों में स्पष्ट नजर आति है।

अर्थ काम जीवन के केंद्र में है और परिधी पर नैतिकता, ईमानदारी, शर्म– हया इत्यादी जो केवल वाचा तक सीमित है कामना उपासना का नेतृत्व करते हुए भी स्वर्ण और मदिरा के चक्कर में अपने समाज को गलत निर्देश देति है। प्रार्थना शब्दावली को आज्ञा में बदल देति है ईश्वर का डर दिखाकर पाप कृत्य करने के लिए बाध्य करती है।

द्वीपवासियों में सारा समाज एक है ऐसी भावना को राजनीति के दायरे में लाकर सत्ता के लिए सिद्धांतों को ताक में रख देती है। सेवा– भाव प्रवृति से स्वार्थ की लोलुप्ता उसके अंदर बसजाति है धीरे–धीरे समृद्धी और भाईचारे की नारेबाजी दरकिनार कर देति है।

उपभोक्तावाद से 'मेटिरियलिजम' बढा है और मानवीय गुणों संवेदना शीलता जैसे नैतिक मूल्यों का क्षरण हुआ है। कामना, विनोद और लीला से कहती है। "मेरे भीतर का बाँकापन सीधा हो गया है मेरे गर्व उसके पैरों मे लोटने लगा। वह अतिथि होकर आया आज स्वामी है। व्यौम शैल से गिरती हुई चन्द्रिका की धारा आकाश और पाताल एक कर रही है [5]" यानी देश विदेश की दूरी कम होते जा रही है।

कामना अपनी अतृप्ती को निम्न लिखित कविता से स्पष्ट करती है।

"घिरे सघन धन नींद न आई, निर्दय भी न अभी आया।

चपला ने इस अंधकार में क्यों आलोक न दिखलाया?

बरस चुकि रस बूँद सरस हो, फिर भी यह मन कुम्हलाया?

उमढ चली ऑखों के झरने हृदय न शीतल हो पाया"[6] ।

इस संदर्भ में नागार्जुन की कविता के पंक्तियाँ याद आ जाते है ।

"रंगी रची पेट से उंगठी

गौना कराई दुल्हन

सोई है या जगी

घुँघट की आड में"![7]

मानव मन की कामना भौतिक सुखों के प्रति अप्रतिहत गति से बढती है विवेक से शून्य कामना में चंचलता उत्पन्न होति है और वह सब कुछ पाकर के भी रिक्त है उसे तृप्ती नहीं है। व्यक्तिगत स्वार्थ अपने आप में शोषण बन गया है। मूल्य हीनता का दौर, मानवीय मूल्यों का विघटन समाज में अपनी प्रभुता और अधिकार जमा कर जीने की प्रवृत्ति बढती जा रही मनोदशा स्पष्ट रूप से नजर आति है। आधुनिकता के दौर में इन स्त्री पात्रों से नवीन समस्याओं का निर्माण होता है जिसके फलस्वरूप मदिरा, नृशंस, क्रूर धूर्त सत्ता की ताकत का गलत इस्तेमाल आपसी लढाई से समाप्त होति दिखाई दे रहीं है।

अतृप्त कामना अस्थिर मति है समुद्र पार से आए नवयुवक को दूर से ही देखकर मुग्ध हो जाति है उसके प्रति समर्पित होने मे उसे तनिक भी देर नहीं लगती विलास को देखते ही वह कह उठती है "है यह कौन मैं क्यों झुकी जा रही हूँ"[8]? और सिर पर क्या चमक रहा है, जो इसे बडा प्रभावशाली बनाया है। इसका व्यक्तित्व ऐसा है कि मै इसके सामने अपने–आप को तुच्छ बना दूँ और अपने आप को समर्पित कर दूँ इस प्रकार मानव मन की अतृप्त भावना स्वर्ण के आकर्षण से आकर्षित होकर अशांत बनती है। कामना एक स्त्री, एक मनोभाव एक ललक मन मे व्याप्त अभाव के कारण विलासोन्मुख होति है ऐसी अतृप्त कामना भौतिक आकर्षणों के पीछे दौढ़ लगाति है कामना ही मन की मुख्य नियामिका है उसके पथभ्रष्ट होते ही मानव मन का पतन होने लगता है, नैतिकता का ह्रास होने लगता है विवेक हीन कामना हित अहित का निर्णय नही कर पाती जिसके फलस्वरूप समाज मे अनाचार अनादर फैल जाता है। अंतत: विवेक एवं संतोष जैसे पुरुष पात्रों के जरिए जनमानस का अज्ञान दूर हो जाता है कामना क भी ज्ञानोदय होता है कामना के संतुष्ट होते ही सारे साम्राज्य में सुख–शांति की लहर छा

जाति है तब विलास को लालसा सहित स्वर्ण देकर विदा की जाति है यही प्रसाद के कामना नाटक में प्रतिपादन करने का प्रयास किया है। स्वर्ण मदिरा या भौतिक नियम अभाव को भाव में बदल नहीं सकते लालसा के आविष्कार वास्तव में कृत्रिम है इस लिए पवित्र कामना की सृजन शीलता को पूर्ण काम नहीं बना पाते फलत: कामना सृजन नहीं केवल ध्वंस का माध्यम बनकर रह जाति है यहाँ लालसा का पतनकारी चित्रण उभरकर सामने आता है।

जीवन के संगी साथी के प्रति लालसा कहती है "मेरा कोई नहीं है साथी जीवन का संगी और दु:ख में सहायक कोई नहीं है अब यह जीवन बोझ हो रहा है। क्या करूँ अकेली बैठी हूँ इतना सोना है परन्तु इसका भोग नहीं इसका सुख नहीं ओह परन्तु नहीं यह जीवन जिसके लिए अनन्त सुख साधन है रोकर बिता देने के लिए नहीं है सब सुखी है सब सुख की चेष्टा में है फिर मैं ही क्यों कोने में बैठकर रूदन करूँ"[9]? लालसा द्वीप की रानी बनने के लिए कामना से प्रतिस्पर्धा करती है कामना के आभूषणों को देखकर जलती है। परिवार टुट रहे है, बिखर रहे है फिर भी परिवार भारतीय जीवन शैली की अनिवार्यता बनी हुई है लालसा और कामना के चरित्र के विरुद्ध नैतिक मूल्यों का पाठ पढानेवाली टूटते हुए परिवार को जोडने का काम वनलक्ष्मी के रूप में जयशंकर प्रसाद हमारे सामने प्रस्तुत करते है। त्याग तपस्यामय, संतोषमय जीवन जीने का अभ्यास कराने का प्रयत्न करती है। कामना नाटक में एक संदर्भ में विलास एक दूसरे की स्त्री को दिखाता है नशे में सब खूबसूरत दिखते है एक दूसरे का हाथ पकडते है विलास सब को एक मण्डालाकार के रूप में खडा करता है। इस शर्मिली घटना के लिए कामना को विलास रानी बनाता है।

इस नाटक की लालसा के पात्र में उसकी मनोदशा देखिए वह कहती है "क्या करूँ अकेली बैठी हूँ इतना सोना है परन्तु इसका भोग नहीं इसका सुख नहीं और अपने आप में समाधान कर लेति है कि जीवन के लिए अनन्त सुख साधन है ।[10]"

समाज में पुरुष से भी ज्यादा स्त्री अधिकार न मिलने पर जल्द ही हताश हो जाति है। जैसे लालसा कहती है मेरे पास मन लगाने की कौन–सी वस्तु है अकेली बैठी हुई दिन बिताती हूँ। गाति हूँ, रोति हूँ और सोति हूँ। "अकेली स्त्री के पास ज्यादा संपत्ति इकट्ठा हो जाति है तो सुरक्षा का डर महसूस होता है। लालसा कामना से कहती है हाँ रानी मैं अकेली हूँ अपने स्वर्ण के लिए दिन रात भयभीत रहती हूँ"[11] ।

कामना नाटक में समय–समय पर वनलक्ष्मी, और करूणा रूपी स्त्री पात्र के जरिए जयशंकर प्रसाद भटके हुए लोगों को सही मार्ग दिखाने का कष्ट उठाया है। करुणा कहती है "यह प्रश्न इस द्वीप में नहीं था सब

एक कुटुम्ब थे परन्तु अब तो यही कहना पडेगा कि मैं शांतिदेव की बहन जब से उसकी हत्या हुई मै निस्साहाय हो गयी। ”

लालसा ने सब धन अपना लिया और घर में भी मुझे न रहने दिया। वह कहती है कि इस घर और संपत्ति पर केवल मेरा अधिकार है और रहेगा।

प्रकृति का खेल यह है कि अपराधियों को बड़ी क्रूरता से प्राणदंड किसी न किसी रूप से मिलता ही है । 'कामना' में द्वीपवासियों द्वारा की गई प्राकृतिक जीवन की उपेक्षा के कारण उनकी हुई दुर्गती का चित्रण प्रसाद जी ने विलास और लीला से किया है। दूसरी और नाटक के अंत में अनाचार युक्त क्रियाकलापों से उबकर प्राकृतिक जीवन का महत्व समझकर द्वीपवासी पुन: प्राकृतिक जीवन की ओर लौट आते हैं। और नाटककार विलास के नाश की झलक देखते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ बच्चन सिंह, हिंदी नाटक साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली
2. नागार्जुन चुनी हुई रचनाएँ : 2 नयी दिल्ली 1985 पृ– 30
3. जयशंकर प्रसाद, कामना जनभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2010 पृ– 11
4. जयशंकर प्रसाद, कामना जनभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2010 पृ– 79
5. जयशंकर प्रसाद, कामना जनभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2010 पृ– 7
6. जयशंकर प्रसाद, कामना जनभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2010 पृ– 26
7. नागार्जुन पत्रहीन नग्नगाछ हापुड नयी दिल्ली 1981 पृ– 85
8. जयशंकर प्रसाद, कामना जनभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2010 पृ– 12
9. जयशंकर प्रसाद, कामना जनभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2010 पृ–56
10. जयशंकर प्रसाद, कामना जनभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2010 पृ–65
11. डॉ श्रृति आनंद सिंह प्रसाद के नटक कामना और भोगवादी दर्शन नैशनल पब्लिशिंग हौस नई दिल्ली पृ–55

डॉ.महमद नयास पाशा, सहायक प्राध्यापक, क्रिस्तुजयंति महाविद्यालय, के नारायणापुरा, बेंगलूरू 560077, दूरवाणी 9632783783, मेल nayazpasha@kristujayanti.com